

प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत में सिक्के

प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत में सिक्के

ऐसा माना जाता है कि सिक्कों का सर्वप्रथम प्रयोग चीन और ग्रीस में (~700 ई.पू.) तथा भारत में छठी शताब्दी ई.पू. में हुआ था।

पंचमार्क सिक्के (600-200 ईसा पूर्व)

- ⊕ सबसे प्राचीन सिक्के; केवल एक तरफ से ढाले गए
- ⊕ अनियमित, मानक वजन, चिह्नित चाँदी से निर्मित
- ⊕ **महाजनपदों द्वारा जारी किये गए-** जिन्हें पुराण, करशापन या पण कहा जाता है
- ⊕ **मौर्य काल के सिक्के-** रूप्यरूप (चाँदी), सुवर्णरूप (सोना), ताम्ररूप (ताँबा), सीसरूप (sisarupa) (सीसा)

इंडो-ग्रीक सिक्के (180 ई.पू. - 10 ई.)

- ⊕ चाँदी, ताँबा, निकल और सीसे से निर्मित
- ⊕ जारी करने वाले सम्राट के बारे में जानकारी देते हैं
- ⊕ सिक्का शिलालेख- ग्रीक और पाली

सातवाहन सिक्के (232 ई.पू.-227 ई.)

- ⊕ सीसे (अधिकतर), चाँदी (कुछ) और पोटिन (ताँबा-चाँदी मिश्र धातु) से निर्मित
- ⊕ कोई कलात्मक गुण/सुंदरता नहीं
- ⊕ इसमें उज्जैन का प्रतीक शामिल है- दो क्रॉसिंग लाइनों के अंत में चार वृत्तों वाला एक क्रॉस
- ⊕ सिक्का शिलालेख- प्राकृत

गुप्तकालीन सिक्के (319-550 ई.)

- ⊕ सोना (मुख्यतः), चाँदी और ताँबे से निर्मित
- ⊕ चंद्रगुप्त द्वितीय के बाद जारी किये गए चाँदी के सिक्के
- ⊕ अश्वमेध करने की जानकारी, भारतीय देवी-देवताओं की मूर्तियाँ
- ⊕ **सिक्का शिलालेख-** संस्कृत

अन्य प्राचीन सिक्के

- ⊕ **चालुक्यकाल के सिक्के:** एक तरफ मंदिर/शेर/किंवदंतियाँ/सूअर, दूसरी तरफ खाली जगह
- ⊕ **राजपूतकालीन सिक्के:** सोने, ताँबे, बिलोन (चाँदी-ताँबे की मिश्रधातु) और कभी-कभी चाँदी से निर्मित
- ⊕ **पांड्यकालीन सिक्के:** संस्कृत (सोने) और तमिल (ताँबे) में शिलालेखों के साथ चौकोर आकार
- ⊕ **चोलकालीन सिक्के:** संस्कृत शिलालेख के साथ राजा और देवी का चित्रण

तुर्की और दिल्ली सल्तनत के सिक्के

- ⊕ इस्लाम में मूर्तिपूजा के निषेध के कारण राजा की कोई प्रतिमा नहीं
- ⊕ सोना, चाँदी, ताँबा और अरबी सिक्के
- ⊕ चाँदी का टका और ताँबे का जीतल- इल्तुतमिश द्वारा प्रारंभ किया गया
- ⊕ **कांस्य, ताँबे के सिक्के, सांकेतिक कागज़ी मुद्रा-** मुहम्मद बिन तुगलक
- ⊕ **रुपया और बाँध-** शेरशाह सूरी

मुगलकालीन सिक्के

- ⊕ मोहर नामक सोने के सिक्के; चाँदी का रुपया सबसे लोकप्रिय (दाम से अपनाया गया)
- ⊕ **अकबर के समय के सिक्के:** गोल और चौकोर दोनों; सोने के सिक्के जिन्हें इलाही कहा जाता है (दीन-ए-इलाही का प्रचार करने के लिये); **शहंशाह-** सबसे बड़ा सोने का सिक्का



Drishti IAS

